सोलहकारण भावना पूजा

1. दर्शनविशुद्धि 2. विनयसंपन्नता 3. शीलव्रतेष्वनतिचार 4. अभीक्ष्णज्ञानोपयोग 5. संवेग 6. शक्तितस्त्याग 7. शक्तितस्तप 8. साधु-समाधि 9. वैयावृत्त 10. अर्हत्भक्ति 11. आचार्यभक्ति 12. बहुश्रुतभक्ति 13. प्रवचनभक्ति 14. आवश्यकापरिहाणि 15. मार्गप्रभावना तथा 16. प्रवचनवात्सल्य।

रचयिता
कविवर पंडित द्यानतराय जी

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

(अडिल्ल)

सोलह कारण भाय तीर्थंकर जे भये।
हरषे इन्द्र अपार मेरु पै ले गये।।
पूजा करि निज धन्य लख्यो बहु चावसौं।
हमहू षोडश कारन भावैं भावसौं।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणानि !
अत्र अवतरत अवतरत, संवौषट्, इति आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणानि !
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, इति स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणानि !
अत्र मम सन्निहितानि भव भव वषट् इति सन्निधिकरणम्।
।। परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

(चौपाई आँचलीबद्ध)

कंचन-झारी निरमल नीर, पूजों जिनवर गुण-गम्भीर।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।।
दरशविशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर-पद-पाय।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि–विनयसम्पन्नता–शीलव्रतेष्वनतिचार–
अभीक्ष्णज्ञानोपयोग–संवेग–शक्तितस्त्याग–तपः
साधुसमाधि–वैयावृत्यकरण–अर्हद्भक्ति–आचार्यभक्ति–
बहुश्रुतभक्ति–प्रवचनभक्ति–आवश्यकापरिहाणि–मार्गप्रभावना–
प्रवचनवात्सल्येति तीर्थंकरत्व–कारणेभ्यो
जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

चन्दन घसौं कपूर मिलाय, पूजौं श्री जिनवर के पाय।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।।
दरशविशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर–पद–पाय।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यः संसारतापविनाशनाय
चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

तन्दुल धवल सुगन्ध अनूप, पूजौं जिनवर तिहुँ जग–भूप।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।।
दरशविशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर–पद–पाय।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये
अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

फूल सुगन्ध मधुप-गुंजार, पूजौं जिनवर जग-आधार।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।।
दरशविशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर-पद-पाय।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय
पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सद नेवज बहुविधि पकवान, पूजौं श्री जिनवर गुणखान।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।।
दरशविशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर पद–पाय।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्य: क्षुधारोगविनाशनाय
नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक–ज्योति तिमिर छयकार, पूजूँ श्रीजिन केवलधार।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।।
दरशविशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर–पद–पाय।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय
दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर कपूरगन्ध शुभ खेय, श्री जिनवर आगे महकेय।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।।
दरशविशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर–पद–पाय।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो अष्टकर्मविध्वंसनाय
धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल आदि बहुत फलसार पूजौं जिन वांछित–दातार।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।।
दरशविशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर–पद–पाय।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये
फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

जल फल आठों दरब चढ़ाय, 'द्यानत' वरत करों मनलाय।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।।
दरशविशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर–पद–पाय।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

जयमाला

(दोहा)

षोडश कारण गुण करै, हरै चतुरगति–वास।
पाप–पुण्य सब नाश के, ज्ञान–भान परकाश।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

(चौपाई)

दरशविशुद्धि धरे जो कोई, ताको आवागमन न होई।
विनय महाधारै जो प्राणी, शिव–वनिता की सखी बखानी।।
शील सदा दृढ़ जो नर पालै, सो औरन की आपद टालै।
ज्ञानाभ्यास करै मनमाहीं, ताके मोह–महातम नाहीं।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

जो संवेग–भाव विसतारै, सुरग–मुकति–पद आप निहारै।
दान देय मन हरष विशेखै, इह भव जस पर भव सुख देखै।।
जो तप तपै खपै अभिलाषा, चूरै करम–शिखर गुरु भाषा।
साधुसमाधि सदा मन लावै, तिहुँ जग भोग भोगि शिव जावै।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

निश–दिन वैयावृत्य करैया, सो निहचै भव–नीर तिरैया।
जो अरहंत भगति मन आनै, सो जन विषय–कषाय न जानै।।
जो आचारज–भगति करै है, सो निर्मल आचार धरै है।
बहुश्रुतवन्त–भगति जो करई, सो नर संपूरन श्रुत धरई।।

प्रवचन–भगति करै जो ज्ञाता, लहै ज्ञान परमानन्द–दाता।
षट् आवश्यक काल जो साधै, सो ही रत्नत्रय आराधै।।
धरम–प्रभाव करै जे ज्ञानी, तिन शिव–मारग रीति पिछानी।
वत्सल अंग सदा जो ध्यावै, सो तीर्थंकर पदवी पावै।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

(दोहा)

एही सोलह भावना, सहित धरै व्रत जोय।
देव-इन्द्र-नर-वंद्य-पद, 'द्यानत' शिव-पद होय।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)